"श्री गणेशाय नमः"

"लघुसिद्धान्तकौमुदी"

"अथ संज्ञाप्रकरणम्"

अइउण् १। ऋऌक् २॥ एओङ् ३। ऐऔच् ४। हयवरट् ५। लण् ६। ञमङणनम् ७। झभञ् ८। घढधष् ९। जबगडदश् १०। खफछठथचटतव् ११। कपय् १२। शषसर् १३। हल् १४॥

इति माहेश्वराणि सूत्राण्यणादि-संज्ञार्थानि। एषामन्त्या इतः। हकारादिष्वकार उच्चारणार्थः। लण्सध्ये त्वित्संज्ञकः।

व्याख्या –

मङ्गलाचरणानन्तरं संज्ञाप्रकरणमारभते - अर्थात् - अस्मिन् प्रकरणे प्रयुज्यमानानां शास्त्रीय संज्ञानां अवबोधो भवति।

अत्र तावत् केचन शङ्का क्रियते - 'ननु एषां चतुर्दशसूत्राणां मुनित्रय - पाणिनि - कात्यायन - पतञ्जलि महोदयैरनुक्तत्वात् कुतः प्रामाण्यमित्यत आह - इति माहेश्वराणि सूत्राणि। - इति - इमानि अइउण् - आदि चतुर्दशसूत्राणि। माहेश्वराणि - महेश्वरादागतानि, महेश्वरवरप्रसादात्पाणिनिना लब्धानि न तु तत्कृतानि। एतेन सिद्धं यन्महेश्वरकृपया पाणिनिना इमानि चतुर्दश-सूत्राण्याकररूपाणि प्राप्तानि। ततश्चैतेरेव - चतुर्दशसूत्रैरेव सम्पूर्णं पाणिनीयं व्याकरणं समुपनिबद्धम्। अत्र बहूनि प्रमाणानि सन्ति। तथाहि - श्रीनन्दिकेश्वरकृतकाशिका-याम् उक्तम् -

"नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥

तत्र सूत्रान्त्याः ण्-क् आदिवर्णाः (अनुबन्धाः) अपि महेश्वरकृता एव। अत्र प्रमाणम् -

'अत्र सर्वत्र सूत्रेषु अन्त्यं वर्णचतुर्दशम्।
धात्वर्थं समुपादिष्टं पाणिन्यादीष्टसिद्धये ॥

• तत्र सूत्रत्वं नाम किमिति प्रश्ने-"अल्पाक्षरत्वे सति बह्वर्थबोधकत्वं सूत्रत्वम्।"

अन्यच्च -"अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्।
अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥

तच्च सूत्रं षट्प्रकारकम्भवति -

"संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम् ॥"

नन्वेषां सूत्राणां व्याकरणे किं प्रयोजनमित्यत आह- अणादिसंज्ञार्थानि। अण्- आदयः संज्ञा अर्थः - प्रयोजनं येषां तानि अणादिसंज्ञार्थानि। एषाम् - अइउण्- इत्यादि चतुर्दशसूत्राणाम्, अन्त्याः - अन्तेऽवसाने भवाः अन्त्याः = णकारादिवर्णाः; इतः - इत्संज्ञकाः 'हलन्त्यम्' इति सूत्रेण भवन्ति। इत्संज्ञाकरणञ्च प्रत्याहारार्थम् ॥

भावार्थः —

प्रस्तुत ग्रन्थ में मङ्गलाचरण अनन्तर संज्ञाप्रकरण प्रारम्भ करते हैं। इस प्रकरण में शास्त्रीय संज्ञाओं का ज्ञान कराया जा रहा है।

अइउण् इत्यादि सूत्र माहेश्वर सूत्र कहे जाते हैं। यहाँ शङ्का होती है कि - अइउण् इत्यादि चौदह सूत्र त्रिमुनि - पाणिनि - कात्यायन - पतञ्जलि प्रणीत नहीं हैं इसका क्या प्रमाण है? इसका उत्तर यह

Scanned with CamScanner

है कि 'इति माहेश्वराणि सूत्राणि – अर्थात् - इति - इमानि अइउण् आदि चतुर्दश सूत्राणि । माहेश्वराणि - महेश्वरादागतानि , महेश्वरवरप्रसादात्पाणिनिना लब्धानि न तु तत्कृतानि -

ये चौदह सूत्र महेश्वर के वरदानस्वरूपशिवप्रसाद से पाणिनि ने प्राप्त किया न कि इनकी रचना स्वयं इन्होंने किया था। इससे यह सिद्ध है कि महेश्वर कृपा से पाणिनि द्वारा यह 14 सूत्र आकर-'भण्डार' रुप में प्राप्त हुआ। इन्हीं सूत्रों के द्वारा सम्पूर्ण पाणिनीय व्याकरण उपनिबद्ध किया गया है। इसलिए श्रीनन्दिकेश्वरकृत काशिका में कहा गया है -

'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां ..... इत्यादी।

'अइउण्' इत्यादि चतुर्दशसूत्रों के अन्तिमवर्ण - ण्-क्' इत्यादि अनुबन्ध भी महेश्वरकृत ही हैं। इसका प्रमाण है -

'अत्र सर्वत्र सूत्रेषु अन्त्यं वर्णचतुर्दशमित्यादीति ॥"

सम्प्राति एक जिज्ञासा यह है कि सूत्र की परिभाषा क्या है? तो उत्तर देते हैं - 'अल्पाक्षरत्वे सति बह्वर्थबोधकत्वं सूत्रत्वम्" - अर्थात् - जो अल्पाक्षर होते हुए भी बहुत अर्थ का बोध करावे वह "सूत्र' है।

दूसरा प्रमाण है -

'अल्पाक्षरमसन्दिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम् ।
अस्तोभमनवद्यञ्च सूत्रं सूत्रविदो विदुः ॥

वे 'सूत्र' छः प्रकार के हैं - संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, अधिकारसूत्र।

किसी ने जिज्ञासा किया कि - 'अइउण्' इत्यादि सूत्रों का व्याकरणशास्त्र में क्या प्रयोजन है? तो कहते हैं - अणादिसंज्ञार्थानि" - अर्थात् -

अण्, अक्, अच्, हल्, इत्यादि संज्ञा हैं प्रयोजन जिनके वे अणादि संज्ञार्थानि हैं। इन 14 सूत्रों के अन्त्यवर्ण ण्-क् आदिवर्ण इत्संज्ञक हैं। प्रत्याहार सिद्धि (हेतु) इत्संज्ञा का प्रयोजन है। 'हलन्त्यम्' इस सूत्र से 'इत्संज्ञा" होती है।

हकारादिष्वकार उच्चारणार्थः -

अर्थात् - हयवर, ल, ञमङणन, झभ, घढध, जबगड, द, खफछठथचटतव, कप, शषस, ह - पूर्वोक्त वर्णों में जो अकार है, वे उच्चारणसौलभ्य हैं क्योंकि 'अच्-स्वर वर्ण' के बिना व्यञ्जन का उच्चारण नहीं होता - अर्थात् - हकार, यकार आदि के साथ उच्चरित अकार का प्रत्याहार के साथ ग्रहण नहीं होता है।

लण्मध्ये त्वित्संज्ञकः -

अर्थात् -

'लण्' इस सूत्र के बीच में जो अकार है वह 'इत्संज्ञक" है। तात्पर्य यह है कि - 'लण्' इस सूत्र के अकार इत्संज्ञक होने से 'र' प्रत्याहार की सिद्धि होती है और 'उरण् रपरः" आदि सूत्रों में 'रपरः" से भी कार्यसिद्धि - कृष्णर्द्धि इत्यादि सिद्धि हो जाती है, नहीं तो 'लपरः" ऐसा कहना पड़ता।

Scanned with CamScanner